अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्य : एक अध्ययन

संस्कृत विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

निहारिका धाकड़

शोध निर्देशिका

डॉ० अनीता

असिस्टेंट प्रोफेसर

संस्कृत विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा – 282005

2024

भूमिका

संस्कृत भाषा प्राचीनकाल से ही ऋषि-मुनियों की भाषा रही है। संस्कृत भाषा पूर्णतया वैज्ञानिक भाषा है। इसी भाषा में वेद, पुराण, स्मृतियाँ, आर्ष-साहित्य तथा समस्त ज्ञान-विज्ञान परक विधाओं का प्रणयन हुआ। इसमें निबद्ध ज्ञान-राशि सहज में ही हमारा उदात्त भावों के साथ संबंध स्थापित कर देती है। यह भाषा सहयोगी एवं अनुकूल विचारों की पवित्रता का अनोखा रत्न है। इसे देववाणी के नाम से भी जाना जाता है। आचार्य दंडी ने 'काव्यादर्श' में कहा है-

"संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः।
भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणभारती।।"

(काव्यादर्श-1/33)

वेदों के रहस्यमय ज्ञान से लेकर साधारण जन-जीवन से संबंधित आचार-विचार एवं व्यवहार संबंधी ज्ञान संस्कृत भाषा में सुरक्षित है। यह भारतवर्ष की सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय एकता को अनुस्यूत करने वाली '**वसुधैवकुटुंबकम्**' की भावना से सकल मानव जाति को विभोर करने वाली, ज्ञान-विज्ञान को प्रमाण सहित स्वयं में सजोए हुए साम्य स्थापित करने वाली भाषा है। तभी तो कहा गया है-

"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वै संस्कृतम् संस्कृतिस्तथा।"

इसके श्लोक, सूक्तियाँ तथा सुभाषित उत्थान व सकारात्मक जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं।

साहित्य में ही प्रत्येक युग का जीवन प्रतिबिंबित होता है। मानव सचेतन, ज्ञानी और संवेदनशील प्राणी है। प्रारंभ में मानव अपनी क्षुधाशांति हेतु वनों में यात्राएँ करता था। तदनंतर मानव विकसित समाज का सदस्य बना और उसने अपने व्यवहार एवं व्यापार में विस्तार देने के लिए यात्राएँ की। आगे चलकर वह व्यापार, विजय एवं ज्ञानप्राप्ति हेतु यात्राएँ करने लगा। यात्राएँ मानव को उत्साह व आनंद प्रदान करती हैं। मानव मस्तिष्क में उल्लास भावना का संचार कर उसमे वर्तमान जीवन को और अधिक आनंदपूर्ण ढंग से व्यतीत करने के लिए प्रेरित करती हैं। यात्राओं के माध्यम से उपलब्ध प्राकृतिक-सौंदर्य व मानवीय-सौंदर्य मानव की मानव के प्रति अनुकूलता में वृद्धि कर संपूर्ण सृष्टि को सौंदर्ययुक्त बनता है। वह अपने परिवेश से प्रभावित होकर अपनी अनुभूतियों को साहित्य के रूप में अभिव्यक्त करता

है।

संस्कृत साहित्य अविच्छिन्न, व्यापक, कलात्मक एवं रचनात्मकता में अनुपम है। संस्कृत का पठन व पाठन भारतीय संस्कृति, धर्म, कला एवं विज्ञान इत्यादि के माध्यम से मानव के ज्ञान तथा सृजन में वृद्धि करता है। इसका धर्म-दर्शन एवं संस्कृति के माध्यम से जीवन-मूल्यों को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान है। संस्कृत साहित्य व्यष्टि को समष्टि से जोड़ता है। इस आह्लाद को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करता है। यथा-संगीत, प्रसाद एवं काव्य अथवा साहित्य इत्यादि।

संस्कृत साहित्य की श्रृंखला अति विशालता एवं प्रभावोत्पादकता से समृद्ध है। जो बहुमूल्य वेद, गंभीर उपनिषद्, आदित्य वेदांग, प्रभावपूर्ण स्मृति, चमत्कारी आर्ष-महाकाव्य-रामायण, महाभारत, पुराण साहित्य से परिपूर्ण है। इनमें भी हमें यात्राओं के संकेत मिलते हैं। इससे सृजित ज्ञान की असाधारण संपत्ति जनमानस को नैतिकता, भौतिकता एवं वैज्ञानिकता इत्यादि से सिंचित कर रही है।

लौकिक संस्कृत साहित्य में विविध विषयों से संबंधित विधाओं की रचना हुई है। आचार्य मम्मट ने अपने 'काव्यप्रकाश' ग्रंथ में काव्य का लक्षण इस प्रकार स्पष्ट किया है-

"तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।"

(काव्यप्रकाश-1/4)

काव्यशास्त्र में काव्य के प्रमुखतः दो भेद हैं- दृश्य काव्य तथा श्रव्य काव्य।

शैली के आधार पर श्रव्य काव्य के भी तीन भेद माने गए हैं- गद्य, पद्य एवं चंपू। आचार्य दण्डी ने 'काव्यादर्श' में कहा है-

"गद्यं पद्यं च मिश्रं च तत् त्रिधैव व्यवस्थितम्।
पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा।।"

(काव्यादर्श-1/11)

पद्य काव्य के पुनः दो भेद है- प्रबंध काव्य एवं मुक्तक काव्य। प्रबंध काव्य के भी दो भेद है- महाकाव्य एवं खंडकाव्य।

गद्य काव्य के पुनः चार प्रकार हैं- मुक्तक, वृत्तगंधि, उत्कलिकाप्राय एवं चूर्णक।

आत्मकथात्मक शैली में लिखित यात्राकाव्य भी वर्तमान में एक विधा रूप में सामने आया है। क्योंकि यात्रा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। भ्रमणशील व्यक्ति मुक्त भाव से अपने द्वारा देखे गए विषयों को आत्मसात कर व्यक्तिगत अनुभव एवं भावनाओं के आधार पर जो तर्क एवं तथ्यपूर्ण साहित्य लिखता है। उस साहित्य को **'यात्रा साहित्य'** के नाम से जाना जाता है। यात्रा से संबंधित विवरण को लिपिबद्ध करने की परंपरा तो अत्यंत पुरानी है, किंतु विधा के रूप में इसका आविर्भाव अर्वाचीन है। यात्रा शब्द की व्युत्पति 'या+ष्ट्रन' प्रत्यय करके हुई है। यद्यपि यात्रा साहित्य में कल्पना व व्यक्तिगत समझ का पुट अधिक रहता है, तथापि उसे रोचक साहित्य एवं विभिन्न संस्कृतियों को समझने में सहायता मिलती है। ऐसा साहित्य मस्तिष्क व ह्रदय में आह्लादित करने में समर्थ होता है। यात्रा साहित्य अंतर्मन में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की प्रगाढ़ता को जन्म देता है।

सृजनात्मक विधा में लिखित महामहोपाध्याय गणपतिशास्त्री का सेतुयात्रा वर्णन यात्राकाव्य, रामस्वामी का त्रिबिल्वदल-चंपू यात्राकाव्य, सखारामशास्त्री का कोंकण यात्राकाव्य, सत्यव्रत शास्त्री का थाईदेशविलासम् यात्राकाव्य। यह यात्राकाव्य पर्यटन, धार्मिक, व्यापारिक, साहित्यिक एवं अनुभव दृष्टियों को ध्यान में रखते हुए लिखे गए हैं। साहित्य में आत्मिक परितोष प्राप्त करने वाले महाकवि कालिदास की छवि को धारण करने वाले अभिराज राजेन्द्र मिश्र संस्कृत के ऐसे सारस्वत साधक है। जिनकी काव्यप्रतिभा काव्य, नाटक, कथा, समीक्षा यात्राकाव्य इत्यादि क्षेत्रों में समान रूप से पल्लवित हुई है। अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वारा लिखित यात्राकाव्य- विमानयात्राशतकम्, निमिपालशतकम्, त्रिपुराशतकम्, रुद्राक्षशतकम्, धारामाण्डवीयम्, हिमाचलशतकम्, उज्जैनीशतकम्, वैशालीशतकम्, गुर्जरशतकम् शनिशतकम्, वरदेश्वरशतकम्, बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम्, यवसाहित्यशतकम् देववाणीहुङ्कारशतकम्, संस्कृतशतकम् इत्यादि हैं। अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्य में वर्णित धार्मिक यात्रा एवं अनुष्ठान, प्रकृति का सौम्य एवं रौद्र चित्रण, विविध तीर्थाटनों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्त्व तथा इन यात्राओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करना ही मेरे शोध का उद्देश्य रहेगा।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र पर किए गए शोध कार्य निम्नांकित हैं-

1. प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र कृत 'जानकीजीवनम्' महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन, 2018, बैरव ओम प्रकाश द्वारा, अनीता गुप्ता के निर्देशन में,(कोटा विश्वविद्यालय कोटा)।

2. अभिराज राजेन्द्र मिश्र प्रणीत 'वामनावतारम्' महाकाव्य का समीक्षात्मक परिशीलन, 2019, मीना सिंह द्वारा, सुशील कुमार पांडेय के निर्देशन में, (डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद)।

3. आधुनिक संस्कृत कथा साहित्य में अभिराज राजेन्द्र मिश्र का अवदान, 2019, शशिकला त्रिपाठी द्वारा, प्रेमलता मिश्र के निर्देशन में, (डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद)।

4. अभिराज राजेन्द्र मिश्र के गीतकाव्यों का एक आलोचनात्मक अध्ययन, 2020, रजनी रमन झा द्वारा, धुनीचंद शर्मा के निर्देशन में, (महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर)।

5. प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र के नवगीतों का समीक्षात्मक अध्ययन, 2021, सुधीर कुमार पांडेय द्वारा, गयाराम पांडेय के निर्देशन में, (महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी)।

मेरे शोध प्रबंध का विषय **अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्य : एक अध्ययन** पर मेरे संज्ञान में अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी से दूरभाषा के माध्यम से वार्तालाप करने पर भी मुझे यह ज्ञात हुआ कि उनके यात्रा काव्यों पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ और न ही वर्तमान में चल रहा है। शोध के समय वर्णनात्मक एवं विवेचनात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा।

सुधीजनों से मेरा अनुरोध है कि मुझे **अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्य : एक अध्ययन** इस विषय पर शोध करने की अनुमति प्रदान कर अनुगृहित करें।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्य : एक अध्ययन

प्रथम अध्याय : भूमिका, संस्कृत साहित्य एवं यात्राकाव्य-परम्परा

1.1 विषय-कथन, महत्त्व, परिसीमन एवं संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण

1.2 संस्कृत यात्राकाव्य: व्युत्पत्ति एवं वर्गीकरण

1.3 संस्कृत यात्राकाव्य का उद्भव-विकास एवं यात्राकाव्यों का संक्षिप्त परिचय

द्वितीय अध्याय : कृतिकार एवं अध्येय कृतियाँ

2.1 कृतिकार: शिक्षा, वृत्ति एवं उपलब्धियाँ

2.2 अध्येय कृतियों का प्रतिपाद्य विषय-विमानयात्राशतकम्, निमिपालशतकम्, त्रिपुराशतकम्, रुद्राक्षशतकम्, धारामाण्डवीयम्, हिमाचलशतकम्, उज्जैनीशतकम्, वैशालीशतकम्, गुर्जरशतकम्, शनिशतकम्, वरदेश्वरशतकम्, बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम्, यवसाहित्यशतकम्, देववाणीहुङ्कारशतकम्, संस्कृतशतकम्

तृतीय अध्याय : अध्येय कृतियों में सांस्कृतिक संदर्भ

3.1 सामाजिक पक्ष

3.2 रहन-सहन व वेशभूषा

3.3 त्यौहार एवं पर्वों का वर्णन

3.4 धार्मिक एवं दार्शनिक प्रवृत्तियाँ

3.5 मूल्य एवं विश्वास

चतुर्थ अध्याय : अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्यों में साहित्यिक संदर्भ

4.1 रस

4.2 छन्द एवं अलंकार

4.3 प्राकृतिक-सौंदर्य-वर्णन

4.4 अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्यों में वर्णित विविध स्थानों का प्राकृतिक-सौंदर्य-वर्णन

4.5 नूतन शब्द-प्रयोग

पंचम अध्याय : आधुनिक संस्कृत साहित्य एवं अभिराज राजेन्द्र मिश्र

5.1 आधुनिक संस्कृत साहित्य को अभिराज राजेन्द्र मिश्र का योगदान

5.2 अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्यों का विषय चयन की दृष्टि से मूल्यांकन

5.3 अभिराज राजेन्द्र मिश्र के कल्पनाश्रित यात्राकाव्य में वर्णित पशु एवं मानव-समाज का अंत:संबंध समस्या, समाधान

उपसंहार

6.1 अध्ययन का निष्कर्ष एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

संदर्भ-ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1. अभिराजसहस्रकम्, मिश्रोऽभिराजराजराजेन्द्रः,(11शतक-1,080 श्लोक) वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद 2000 ई.

2. शतकपंचदशी, मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः,(धार्मिक शतक-4-553श्लोक, व्यङ्ग्यात्मक शतक-2-235श्लोक, यात्रात्मक शतक-3-356 श्लोक, राष्ट्रीय शतक-2-276, वैयक्तिक शतक-4-409) केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 2022 ई.

3. पञ्चकुल्या, मिश्रोऽभिराजराजराजेन्द्रः, (शतक-5-561श्लोक) वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993 ई.

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वे. वरदाचार्य रामनारायणलाल वेनीप्रसाद प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, इलाहाबाद 1962 ई.

2. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉक्टर कपिलदेव द्विवेदी , अनिल प्रिंटर्स 193/13 एलगिन रोड , इलाहाबाद

3. आधुनिक संस्कृत काव्य परंपरा, केशव मुसलगांवकर, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, 2004 ई.

4. काव्यप्रकाश, आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि, ज्ञानवर्धक लिमिटेड, वाराणसी, 1960ई.

5. काव्यादर्शः, आचार्य दंडी, आचार्य श्रीरामचंद्र मिश्रः, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, 1991 ई.

6. संस्कृत वांङमय का वृहद् इतिहास (सप्तम खंड), आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ

7. संस्कृत साहित्य बीसवीं शताब्दी, राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रतिभा प्रकाशन, शक्ति नगर दिल्ली, 1990 ई.

8. यात्रा साहित्य का उद्भव एवं विकास (आलोचनात्मक अध्ययन), डॉ. सुरेंद्र माथुर, साहित्य प्रकाशन, मालीवाडा, दिल्ली -1962 ई.

संस्कृत पत्र-पत्रिकाएं

1. अर्वाचीन संस्कृतम् (त्रैमासिक पत्रिका), देववाणी परिषद वाराणसी उत्तरप्रदेश।

2. शोधप्रभा (त्रैमासिक पत्रिका) राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।

व्याकरण एवं कोश ग्रंथ

3. संस्कृत साहित्य कोश, श्री कृष्णा सेमवाल, दिल्ली संस्कृत अकादमी, 1996 ई.

4. संस्कृत हिंदी शब्दकोश, वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिकेशन, दिल्ली, 1967 ई.

वेबसाइट्स

1. https://vishwahindijan.blogspot.com

2. https://hindimedia.in

3. https://egyankosh.ac.in

4. https://www.sanskrit.nic.in

5. https://www.inditales.com

Al. Tools

1. Introducing chat GPT

2. Google Gemini

3. Perplexity